

1.

T.D.C-II
Pol.Sc-IV

R.B.G.R. College, Maharajganj (Siwan)
Dr. Md. Mehbub Alam Shah
Dept of Pol. Sc
Guest Asst. Professor (1)

प्रश्न:- तुलनात्मक राजनीति से आप क्या समझते हैं?
तुलनात्मक राजनीति के प्रसार एवं क्षेत्र की व्याख्या करें।

उत्तर:- तुलनात्मक राजनीति विभिन्न शासन-व्यवस्थाओं, राजनीतिक प्रक्रियाओं तथा राजनीतिक व्यवस्थाओं का तुलनात्मक ढंग से अध्ययन तथा विश्लेषण है।

"Comparative politics is comparative analysis of various forms of government and diverse political institutions"- Edward Freeman.

(एडम फ्रीमन) के अनुसार- "तुलनात्मक राजनीति समूह सामाजिक व्यवस्था में उन तत्वों की पहचान और व्याख्या करता है जो राजनीतिक प्रक्रियाओं और उनके संसाधन, प्रशासन और प्रभावित करने हैं।"

ऐसे में हम कहते हैं कि तुलनात्मक राजनीति एक स्वतंत्र अनुशासन है क्योंकि एक स्वतंत्र अनुशासन के लिए जिन आवश्यक सुसंरचित और निश्चित विषय क्षेत्रों की जरूरत होती है वे सब इसमें हैं।

कुलम तुलनात्मक राजनीति की प्रसार के संदर्भ में दो तरह की व्यवस्थाएँ हैं:-

(1) तुलनात्मक राजनीति अनुलंब तुलना के रूप में।

(2) तुलनात्मक राजनीति अंतरांशिक तुलना के रूप में।

(1) तुलनात्मक राजनीति अनुलंब तुलना के रूप में:-

इस व्याख्या के समर्थकों

का मत है कि तुलनात्मक राजनीति व्यवस्थाओं (कई देशों में अस्तित्व विभिन्न स्तरों पर स्थापित विभिन्न सारों तथा उनको प्रभावित करने वाले राजनीतिक व्यवस्थाओं) का तुलनात्मक विश्लेषण एवं अध्ययन है।

इस मत को मानने वाले यह तर्क देते हैं कि प्रत्येक रूप में अनेक स्तर पर आंशिक या स्थानीय सारों

इस दोनों सहारों के बीच के सम्बन्धों की तुलना बना
ही तुलनात्मक (जनीति) की प्रकृति है।

कामोच्ये द्वारा इस मत का सटीक समर्थन
दिया गया है। कामोच्ये का मत है कि राष्ट्रीय सहारों
कोर कांशिक सहारों के बीच विच्छेद वाली समानता होती
है। पल्लु यात्रे हम इन समानताओं की गहराई में जाते
हैं जो सिर्फ असमानता ही विवरण पड़ती है।

of economic means - Equality of Rules तथा

Equality of power का अर्थ है विस्तृत अध्ययन

करते हैं जो पाले हैं कि कुछ समानताओं के

बावजूद राष्ट्रीय तथा कांशिक सहारों के सम्बन्ध में

असमानता ही काय्यक है। ऐसे में सामान्यीकरण के

अभाव में तुलनात्मक अध्ययन असम्भव हो जाता है।

(2) तुलनात्मक (जनीति) एक अवरोधीय तुलना है:-

इस मत में कामोच्ये (जनीति) शास्त्रीजी सहमत हैं। इसमें तुलनात्मक (जनीति) की प्रकृति निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट होती है।—

1) एक राष्ट्र की राष्ट्रीय सहारों की ऐतिहासिक तुलना:-

प्रत्येक राष्ट्र की वर्तमान (जनीतिक) व्यवस्था की एक लम्बी ऐतिहासिक प्रकृति होती है। वर्तमान (जनीतिक) संस्थाओं की प्रक्रियाओं को व्यवस्था की तुलना करती है। (न) सम्भव है। जैसे प्रत्येक मातृ की तुलना (प्रिचि) मातृ या मध्य मातृ या फिर प्राचीन मातृ से सम्भव है। ऐसे ही नेशन युद्ध की तुलना वाजपेयी युद्ध से भी की जा सकती है।

2) समकालीन विश्व में व्याप्त राष्ट्रीय सहारों की अवरोधीय तुलना:-

इस मत के लक्ष्य समकालीन विश्व की (जनीतिक) व्यवस्थाओं से सम्बद्ध राष्ट्रीय सहारों का राष्ट्रीय सीमाओं के कार-पाठ अध्ययन करना है।

वैश्व आज इसकी प्रकृति बहुत व्यापक हो चुकी है। तुलनात्मक (जनीति) सिर्फ एक ही देश के विभिन्न राष्ट्रीय सहारों का ऐतिहासिक संदर्भ में और राष्ट्रीय सीमाओं

के आदि-पाए तुलनात्मक अध्ययन नहीं पाए यह
एजनीतिक प्रक्रियाओं एवं एजनीतिक व्यवस्था तथा सकारणी
तन्त्रों की प्रभावित करने वाली गैर सकारणी व्यवस्थाओं
का भी तुलनात्मक अध्ययन है।

आज तुलनात्मक एजनीति पाश्चिमी गैर-
पाश्चिमी और साम्यवादी देशों की संस्थाओं का तुलनात्मक
विश्लेषण है। ~~तुलनात्मक~~ तुलनात्मक एजनीति विभिन्न एजनीतिक
संस्थाओं के साथ अएजनीतिक संस्थाओं एवं प्रभावों
का अध्ययन है। तुलनात्मक एजनीति में मानव
प्रभाव उन ही परिस्थितियों उनके व्यवस्था के साथ-
साथ एजनीतिक क्रिया-कलापों, एजनीतिक प्रक्रिया
को एजनीतिक सत्ता का अध्ययन किया जाता है।
इसमें विभिन्न एजनीतिक प्रणालियों के मूल्यों की तुलना
की जाती है।

तुलनात्मक एजनीति के विषय क्षेत्र हैं
लेख विद्वानों में बड़ा मतभेद है। इस विषय में सबसे
बड़ी समस्या यह जानी है कि इसमें कौन-कौन से विषय शामिल
किये जायें या कौन हटाया जायें। तुलनात्मक एजनीति
में लिंग-सम्बन्धी विवाद पर तुलनात्मक एजनीति
अध्ययन किया जाता है। विद्वानों की ये बात सर्वमान्य
है कि तुलनात्मक एजनीति का सम्बन्ध राष्ट्रीय सत्ताओं
से है और इसमें सकारणी ढाँचा का अध्ययन ही होता
है। साथ-ही-साथ सत्ताओं के कार्यकलापों और
गैर एजनीति संस्थाओं के एजनीतिक सत्ता का
अध्ययन भी होता है। जहाँ स्थान उठता है कि
सत्ता की क्रियाओं की व्याख्या किस ढंग से है,
इस सम्बन्ध में दो दृष्टिकोण प्रचलित हैं—
(1) अपनी या संस्थागत दृष्टिकोण:—

इस दृष्टिकोण की बात
हम मानेंगे। तुलनात्मक एजनीति में सिर्फ संविधानों
द्वारा स्थापित सकारणी संस्था का तथा संविधान
द्वारा विचारित एजनीतिक व्यवस्था का तुलनात्मक
अध्ययन ही किया जाता है। यह दृष्टिकोण के

(4)
मानने वालों का कथन है कि संविधान ही सच है
कि हाँ है का अध्ययन हुआ है और इसी के माध्यम
से ही संस्था के अर्थों का नियमन होता है। ऐसी
में तुलना राष्ट्रीय सरकारों के आध्यात्म, संविधान
तथा इनके द्वारा नियत कार्यकलापों की ही होती
चाहिए।

पण्डित इस दृष्टिकोण की आलोचना करते हैं।
आलोचकों का मानना है कि अन्य चीजों के अलावा
ऐसी तुलना मात्र विषादही होगी।

(5) व्यवहारिक दृष्टिकोण :-

इस दृष्टिकोण के मानने वाले
विचारकों का मत है कि तुलनात्मक राजनीति में सिर्फ
भरपूर व्यवस्था का औपचारिक अध्ययन और
तुलना पर्याप्त नहीं है। इस संदर्भ में प्रमुख बातें यह
हैं कि राजनीतिक व्यवस्था की प्रचलित व्यवहारिक
व्यवस्था है तथा राजनीतिक संस्थाओं का वास्तविक
व्यवहार क्या है। जी. विलियम्स मसोदम ने
राजनीति के व्यवहारिक पक्ष को आध्यात्मिक एम. मोलिक
माना है। उनका कथन है कि तुलनात्मक राजनीति की भरपूर
परिधि में न बौद्धिक उससे बल्कि गणितीय है।
व्यवहारवादियों की मान्यता है कि
तुलनात्मक राजनीति में राष्ट्रीय सरकारों तथा गैर
राज्य संस्थाओं के राजनीतिक व्यवहार से सम्बद्ध सामान्य
तथ्य एकाग्रित करके विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं
में तुलना करनी चाहिए। 19-प्रसंग में राजनीति
विज्ञान पर प्राकृतिक विज्ञानों तथा अन्य सामाजिक
विज्ञानों के प्रभाव की ही व्यवहारिक विश्लेषण
करा जा रहा है।

तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र के सम्बन्ध
में फाम्परावादियों ने शासन की संरचनाओं और
संविधानिक ढाँचे के वर्णनों पर जोर दिया है। पण्डित
आधुनिक दृष्टिकोण आधिकारीकरण से लोकतांत्रिक
करने वाले हैं।